(13)

नव वर्ष की शुभकामना

सविता घरें समत्व को, शुभद्युति राकानाथ।
सर्व प्राणधर हितनिरत, अनल अनिल के साथ।। 1 ।।

निर्मल वसुयुत हो पुनः, यह वसुमती यथार्थ ।
वैठ प्रकृति की क्रोड, में नर हो आशु कृतार्थ।। 2 ।।

हर हर लें दूषण सकल, अविकल हो हर क्षेत्र।
निर्विष हो अंतर्जगत, फिर हों सदय त्रिनेत्र।। 3 ।।

उस जागृति का हो उदय, प्रकटित हो उद्देश्य।
स्वामी अब बनकर रहें, बहुत रहे मन प्रेष्य।। 4 ।।

नर्तन नित्य निसर्ग का, देखें रूक चुपचाप।
दर्शक बनना मुक्ति है, कर्तापन अभिशाप।। 5 ।।

भ्राम्यमान बहु परिधि पर, अस्थिर और प्रकीर्ण।
भाग्यवान आ केन्द्र पर, करते व्यथा विशीर्ण।। 6 ।।

शिव कुमार मिश्र